# Utkal University

Utkal University, established in the year 1943, is the seventeenth oldest University in India. Its present campus is located on a sprawling 399.9 acre area in the heart of Bhubaneswar. The foundation stone of this Campus was laid by Dr. Rajendra Prasad, the first President of India on 1st January, 1958 and the Campus was inaugurated by Dr. S. Radhakrishnan, the second President of India on 2nd January, 1963.

After the separation of Odisha from Bihar and the creation of the new province of Odisha in April 1936, there was a strong desire among the leaders of the province for the establishment of a separate university in Odisha. Until 1936 all the colleges were under the jurisdiction of either Patna University or Andhra University. Subsequently the Government of Odisha, appointed a committee on 2nd March, 1938, with Pandit Nilakantha Das as its chairman to examine the possibility of establishing a separate university in Odisha. During the premiership of Maharaja Krushna Chandra Gajapati, who played a pioneering role in the establishment of the university, the recommendation of this committee was made available. Subsequently the Utkal University Act 1943 came into force on 2nd August, 1943 clearing the way for the foundation of the university on November 27, 1943.

In 1966 that Act was repealed and a new Utkal University Act came into effect from 1st January, 1967. Initially Utkal University was operating from the Ravenshaw College, before it came to its own campus at Bhubaneswar, called Vani Vihar. Ravenshaw College remained affiliated to Patna University even after the separation of Odisha from Bihar in 1936; the affiliation was finally transferred to the newly created Utkal University in 1943. In fact, it was Ravenshaw College that gave birth to the new university, nursed and sustained it. It operated from Ravenshaw College's present Zoology Department building premises.

Professor Prana Krusna Parija (1 April 1891 – 2 June 1978) after whom the library of Utkal University has been named, was the first Vice Chancellor of the University. He was a botanist, academician and contributed immensely as a scientist towards agricultural development in Odisha. He was a member of Odisha's first Legislative Assembly. He was conferred with the award of Officer of the Order of the British Empire (1944) and Padma Bhushan (1955).

Utkal University is a teaching-cum-affiliating University. There are at present twenty seven Post-Graduate Departments located in the University Campus for Post-Graduate studies and research in various disciplines of Science, Humanities, Business Administration, Social Science, Law and Commerce. The total number of students in the P.G. Department of the campus at Vani Vihar is nearly 3,000. This is in fact the largest affiliating University in the country with approximately 267 affiliated Colleges (Degree Colleges-219, Professional Colleges-44 and other Constituent Colleges-2) under its jurisdiction.

The University has jurisdiction over 9 districts, viz. Angul, Cuttack, Dhenkanal, Jajpur, Jagatsinghpur, Kendrapara, Khurda, Nayagarh and Puri and caters to the needs of higher education of a population of more than 110 lakh.

Apart from the constituent Institutions at Vani Vihar, M. S. Law College of the University is located at Cuttack. Besides the regular courses, twenty-six sponsored courses are offered under the direct academic control of the P.G. Council of the University.

The University's vision is to be a centre of excellence in higher education with focus on innovative teaching, learning, research, consultancy and extension activities in building a creative, enlightened and productive civil society.

The University's mission is:

- To provide the students with knowledge, skill, values and sensitivity necessary for a successful citizen.
- To create and disseminate knowledge through interdisciplinary research and creative inquiry in developing a meaningful and sustainable society.
- To equip the students with problem solving, leadership and teamwork skills and inculcating a sense of commitment to quality, ethical behavior and respect for others.
- To provide a platform for free flow of ideas where discovery, creativity and professional development finds a scope for fulfillment in making the world a better place to live in.
- To ensure academic excellence in a dynamic knowledge economy by exposing the students to new ideas, new ways of understanding, new ways of knowing in their journey of intellectual transformation.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Utkal University.


**Credits:**

| | | |
|---|---|---|
| **Text** | : | Based on information received from the proponent |
| **Stamps/FDC/Brochure** | : | Sh. Brahmprakash |
| **Cancellation Cachet** | : | Smt. Nenu Gupta |


भारतीय डाक विभाग
**Department of Posts India**

उत्कल विश्वविद्यालय
**UTKAL UNIVERSITY**

विवरणिका BROCHURE

# उत्कल विश्वविद्यालय

उत्कल विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1943 में हुई। यह भारत में सत्रहवां प्राचीनतम विश्वविद्यालय है। भुवनेश्वर के मध्य में स्थित इसका मौजूदा परिसर 399.9 एकड़ क्षेत्र में फैला है। इस परिसर की आधारशिला भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा 1 जनवरी, 1958 को रखी गई और परिसर का उद्घाटन भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डा. राधाकृष्णन द्वारा 2 जनवरी, 1963 को किया गया।

ओडिशा के बिहार से अलग होने और अप्रैल, 1936 में नए प्रांत ओडिशा के बनने के बाद, प्रांत के नेताओं की प्रबल इच्छा थी कि ओडिशा में एक अलग विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। 1936 तक सभी कॉलेज या तो पटना विश्वविद्यालय अथवा आन्ध्र विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार में थे। तदनन्तर, ओडिशा सरकार ने ओडिशा में एक अलग विश्वविद्यालय की स्थापना की संभावना की जांच करने के लिए पंडित नीलकण्ठ दास की अध्यक्षता में 2 मार्च, 1938 को एक समिति का गठन किया। महाराजा कृष्णचन्द्र गजपति, जिन्होंने विश्वविद्यालय की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई, के शासनकाल के दौरान, इस समिति की सिफारिशें उपलब्ध कराई गई। तदनन्तर, 2 अगस्त, 1943 को उत्कल विश्वविद्यालय अधिनियम, 1943 लागू हुआ, जिससे विश्वविद्यालय की स्थापना का रास्ता साफ हुआ। 27 नवंबर, 1943 को इसकी स्थापना हुई।

1966 में इस अधिनियम को निरस्त कर दिया गया और 1 जनवरी, 1967 से नया उत्कल विश्वविद्यालय अधिनियम लागू हुआ। प्रारंभ में, उत्कल विश्वविद्यालय 'वाणी विहार' नामक अपने परिसर में आने से पूर्व, रावेनशॉ कॉलेज से कार्य कर रहा था। 1936 में ओडिशा के बिहार से अलग होने के बाद भी रावेनशॉ कॉलेज पटना विश्वविद्यालय से संबद्ध रहा। अंततः 1943 में यह संबंधन नव निर्मित उत्कल विश्वविद्यालय में अंतरित हो गया। वास्तव में, यह रावेनशॉ कॉलेज ही था जिसने नए विश्वविद्यालय का निर्माण किया, इसे विकसित किया और इसे मजबूती प्रदान की। इसने, रावेनशॉ कॉलेज के मौजूदा प्राणि–विज्ञान विभाग भवन परिसर से कार्य किया।

प्रोफेसर प्राण कृष्ण परीजा (1 अप्रैल, 1891 – 2 जून, 1978), जिनके नाम से उत्कल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का नाम रखा गया है, विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति थे। वह एक वनस्पतिज्ञ और शिक्षाविद थे। उन्होंने ओडिशा में कृषि संबंधी विकास के लिए एक वैज्ञानिक के रूप में अत्यधिक योगदान दिया। वे ओडिशा की प्रथम विधानसभा के सदस्य थे। उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के आफिसर ऑफ द आर्डर अवार्ड (1944) और पद्मभूषण (1955) पुरस्कार प्रदान किए गए।

उत्कल विश्वविद्यालय शिक्षण–सह–संबद्धक विश्वविद्यालय है। इस समय विश्वविद्यालय परिसर में विज्ञान, मानविकी, व्यवसाय प्रशासन, समाज विज्ञान, विधि एवं वाणिज्य के विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर अध्ययन और शोध करने के लिए सत्ताईस स्नातकोत्तर विभाग स्थापित हैं। वाणी विहार परिसर के पीजी विभाग में विद्यार्थियों की कुल संख्या लगभग 3,000 है। वास्तव में यह देश का सबसे बड़ा संबद्धक विश्वविद्यालय है। इसके क्षेत्राधिकार में लगभग 267 संबद्ध कॉलेज (डिग्री कॉलेज–219, व्यावसायिक कॉलेज–44 और अन्य घटक कॉलेज–2) हैं।

विश्वविद्यालय के क्षेत्राधिकार में 9 जिलों अर्थात अंगुल, कटक धेनकेनाल, जयपुर, जगतसिंहपुर, केन्द्रपाड़ा, खुर्दा, नयागढ़ और पुरी हैं। विश्वविद्यालय 110 लाख से अधिक आबादी की उच्च शिक्षा की जरूरतों को पूरा करता है।

वाणी विहार में घटक संस्थानों के अलावा, विश्वविद्यालय का एमएस लॉ कॉलेज कटक में स्थित है। नियमित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ, विश्वविद्यालय के पीजी परिषद के प्रत्यक्ष शैक्षणिक नियंत्रण के तहत छब्बीस प्रायोजित पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

इस विश्वविद्यालय का लक्ष्य एक सृजनात्मक, प्रबुद्ध और उपयोगी सभ्य समाज के निर्माण के लिए नवीन शिक्षण, शिक्षा, शोध, परामर्शदात्री और विस्तार–कार्यकलापों पर ध्यान देते हुए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र बनना है।

विश्वविद्यालय का मिशन है:–

- विद्यार्थियों को, सफल नागरिक बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, मूल्य और संवेदनशीलता प्रदान करना।
- एक अर्थपूर्ण और संपोषणीय समाज का विकास करने के लिए अन्तः अनुशासनात्मक शोध और रचनात्मक खोज के माध्यम से ज्ञान का सृजन करना और प्रचार–प्रसार करना।
- छात्रों में समस्या का हल करने, नेतृत्व और टीम वर्क कौशल तथा गुणवत्ता, नैतिक व्यवहार और दूसरों के प्रति सम्मान हेतु प्रतिबद्धता की भावना पैदा करना।
- इस विश्व को रहने के लिए एक बेहतर स्थान बनाने के लिए छात्रों में खोज, रचनात्मकता और व्यावसायिक विकास संबंधी विचारों के मुक्त प्रवाह के लिए उन्हें एक मंच प्रदान करना।
- छात्रों को बौद्धिक विकास की उनकी यात्रा में सफल बनाने के लिए ज्ञान–विज्ञान में नए विचारों, नए रास्तों से परिचित कराकर इस गतिशील ज्ञान की व्यापकता में शैक्षिक उत्कृष्टता सुनिश्चित करना।

डाक विभाग उत्कल विश्वविद्यालय पर एक स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।


**आभार:**

| | | |
|---|---|---|
| **मूलपाठ** | : | प्रस्तावक से प्राप्त सूचना पर आधारित |
| **डाक टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका** | : | श्री ब्रह्मप्रकाश |
| **विरूपण** | : | श्रीमती नीनू गुप्ता |


भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

## तकनीकी आंकड़े
## TECHNICAL DATA

| | | |
|---|---|---|
| मूल्यवर्ग | : | 500 पैसा |
| Denomination | : | 500 p |
| मुद्रित डाक–टिकटें | : | 408000 |
| Stamps Printed | : | 408000 |
| मुद्रण प्रक्रिया | : | वेट ऑफसेट |
| Printing Process | : | Wet Offset |
| मुद्रक | : | भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद |
| Printer | : | Security Printing Press, Hyderabad |

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html



मूल्यः ₹ 5.00